

वन उत्पादकता संस्थान रांची

हमारे देश का पूर्वी क्षेत्र विविध पारितंत्रों का बना है। इसमें उत्तरी-पश्चिम बंगाल और सिक्किम में पुरातन, सुरम्य और सुकुमार पश्चिमी हिमालय, बिहार और पश्चिम बंगाल में गंगा बेसिन के निचले खण्डों की तटीय बंजरभूमियों के साथ छितराए उर्वरक एवं कछारी पूर्वी मैदान, विश्व प्रसिद्ध सुन्दरवन की डेल्टीय एवं तटवर्ती कच्छवनस्पति, बिहार के उत्तर-पश्चिम छोर में तराई साल वनों के पॉकेट और समृद्ध एवं सम्मोहक कोयला और अन्य खनिज भण्डारों से आच्छादित कैमूर एवं छोटानागपुर पठार के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन सम्मिलित हैं।

सहवर्ती लक्षण झारखण्ड दक्षिण-पश्चिम बंगाल व दक्षिण बिहार के समीपवर्ती भूभागों और छोटा नागपुर पठार के निम्नीकृत वनों की विशाल सीमा, वन क्षीयमान प्रजाति समृद्धता विशेषकर औषधीय पादपों, बांस और बेटों की संकटस्थ जैवविविधता; औद्योगिक उद्देश्यों के लिए खनन और विकास के भारी दबाव हैं। इस क्षेत्र का बड़ा हिस्सा विश्व की सघनतम ग्रामीण आबादियों में से एक है और जिसे इस क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों द्वारा पर्यावरणीय सुधार और भूमि की सक्षम उत्पादकता की संवृद्धि करने की आवश्यकता है, जो व्यापक किस्म की अनुसंधान समस्याओं का सामना करते हैं।

क्षेत्र विशेष अभिलक्षणों के साथ उपर्युक्त लक्षणों द्वारा उत्पन्न एवं प्रचलन की मुख्य समस्याओं के समाधान हेतु वानिकी एवं संबद्ध क्षेत्रों के साथ सम्बद्ध जैव-भौतिक प्राकृतिक प्रणालियों के सारभाग में अनुसंधान एवं विकास की भूमिका निभाने के लिए संस्थान ने विभिन्न पणधारियों एवं उपभोक्ता एजेन्सियों, गैर सरकारी संगठनों, अनुसंधान संगठनों, बिहार, झारखण्ड, सिक्किम, पश्चिम बंगाल और जनसाधारण के लाभ के लिए अनेकों अनुसंधान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु किए हैं। इसके अधिकार क्षेत्र में छः कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्र और आठ मुख्य वन किस्में हैं।

वर्ष 2005-2006 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : विभिन्न मृदाय अवस्थाओं के तहत कुछ चयनित रोपणों में पोषक चक्रण के विशेष संदर्भ में मृदा वनस्पति पारस्परिक क्रिया (आई एफ पी-9/एस एल आर/पी-III/2002-2006)

उपलब्धियां : उत्पादकता की वृद्धि एवं मूल्यांकन और मृदा वनस्पति पारस्परिक क्रिया के लिए क्षेत्र सर्वेक्षण: दक्षिण-पश्चिमी बंगाल की कछारी, तटवर्ती और लेटराइट मृदाओं के तहत 132 रोपण स्थलों से दक्षिण-पश्चिम बंगाल, उदा0-एकेशिया ऑरिकूलिफॉर्मिस, ए. मैन्जियम, ऐजैडिरैक्टा इंडिका, डैल्बर्जिया सिस्सू, यूकेलिप्टस, मेलाइना आर्बोरीया, शोरीया रॉबुस्टा और टेक्टोना ग्रैन्डिस, में रोपित सबसे आम वृक्ष प्रजातियों की वृद्धि की तुलना की गई। 6 साल के रोपणों के यूकेलिप्टस, ए. आरिकूलिफॉर्मिस, ए. मैन्जियम एवं डेन्ड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस की खरपतवार. पातन मौसमीयता की गणना की गई और पाया गया कि ए. मैन्जियम ने अधिकतम खरपतवार (9.18 टन/हैक्टेयर) उत्पादित किया, इसके बाद ए. ऑरिकूलिफॉर्मिस (6.95), यूकेलिप्टस (5.97) और डी. स्ट्रिक्टस (4.50 टन/हैक्टेयर)।

पादप पोषक मूल्यांकन पर पौधशाला परीक्षण : ए. ऑरिकूलिफॉर्मिस, ए. मैन्जियम और यूकेलिप्टस प्रजातियों के लिए पोषक मात्राओं के सबसे उपयुक्त संयोजनों के इष्टतमीकरण के लिए पोषकों के उदग्रहण पैटर्न, वृद्धि पर प्रमुख पादप पोषक (नाइट्रोजन, पोटेसियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम और चूना) की भूमिका के अध्ययन के लिए श्रृंखलाबद्ध पौधशाला परीक्षण किए गए। चूने के बिना निम्नीकृत लेटराइट मृदा पर ए. मैन्जीयम पौधों के लिए एकल एन, पी और के की अनुकूलतम मात्राएं 140-260 mgN, 125 mgP₂O₅ और 115 mg K₂O प्रति किग्रा मृदा पाई गई। जबकि 150-175 mgN, 110 से 115 mg P और 110-115 mg K प्रति किग्रा. मृदा की संयुक्त मात्रा अनुकूलतम पाई गई। ए. ऑरिकूलिफॉर्मिस के लिए एन, पी और के की एकल मात्राएं क्रमशः 140 से 160



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

mg, 115 से 130 mg और 110 से 115 mg प्रति किग्रा. मृदा है। यूकेलिप्टस के लिए समतुल्य मात्राएं निम्नीकृत मृदा की कुछ उच्च, यथा 150 से 175 mgN, 120-140 mg P और 115 से 130 mg K चूना (28.4 mg/किग्रा. मृदा) है, जो सभी तीन परीक्षित प्रजातियों की वृद्धि अनुकूल हैं और एन, पी, के के संयुक्त उपयोग ने वृद्धि को अधिक उन्नत किया।

निम्नीकृत लेटराइटी मृदा अवस्था के तहत मैग्नीशियम पर यूकेलिप्टस, ए. ऑरिकूलिफॉर्मिस एवं ए. मैन्जियम पौधों की अनुक्रिया का मूल्यांकन करने हेतु नेतियापुर में 5 से 75 मिग्रा प्रति किग्रा मृदा तक मैग्नीशियम मात्रा दी गई। बिना मैग्नीशियम उपचार वालों की तुलना में पौधों की वर्धित वृद्धि देखी गई। मैग्नीशियम की निम्न मात्राओं यथा - 15 से 35 मिग्रा. प्रति कि.ग्रा. मृदा ने यूकेलिप्टस और ए. ऑरिकूलिफॉर्मिस की वृद्धि को बढ़ाया।

वृक्ष पोषण मूल्यांकन पर क्षेत्र परीक्षण : 5 साल के ऐकेशिया ऑरिकूलिफॉर्मिस, ए. मैन्जियम और यूकेलिप्टस प्रजाति में 20 से 350 ग्रा. नाइट्रोजन, 10 से 250 ग्रा. फास्फोरस और 10 से 250 ग्रा. पोटेशियम प्रति पादप डाला गया और यह देखा गया कि यूकेलिप्टस के लिए 150 से 170 ग्रा. एन, 75 से 85 ग्रा. पी और 45-55 ग्रा. के सबसे अनुकूल संयोजन पाए गए और ऐकेशिया ऑरिकूलिफॉर्मिस एवं ए. मैन्जियम के लिए 120-130 ग्रा एन, 85 से 100 ग्रा पी और 45 से 55ग्रा. के अनुकूलतम हैं।

परियोजना 2 : निम्नीकृत लेटराइटी मृदा अवस्था के तहत वन वृक्ष प्रजाति की उत्पादकता के संबंध में जैव उर्वरकों का विकास और इनके उपयोग का मानकीकरण (आई एफ पी-3/बी जी टी-एस पी-3/पी-आई/2002-2005)

उपलब्धियां : वन वृक्ष प्रजातियों के साथ सम्बद्ध आर्बूस्कूलर माइकोराइजल कवक और पादप वृद्धि पर इनका प्रभाव : ए एम कवक के प्राप्तिस्थान अध्ययन के लिए ऐकेशिया ऑरिकूलिफॉर्मिस, ए. मैन्जियम, बांस, टैक्टोना ग्रैन्डिस और प्राकृतिक कॉपिस साल (शोरीया रॉबुस्टा) वनों के रोपणों का सर्वेक्षण, किया और कुल प्रजातियों को मूल परिवेधी मृदाओं से अभिलिखित किया।

एजोटोबेक्टर और राइजोबियम बैक्टीरिया का पृथक्करण और इनकी भूमिका का अध्ययन : दक्षिण-पश्चिम बंगाल के पूर्व एवं पश्चिम मिदनापुर जिलों में कृष्ट विभिन्न प्रजातियों के मूल परिवेधी मृदाओं से 21 एजोटोबैक्टीरिया और राइजोबियम बैक्टीरिया के विशुद्ध संवर्धों को पृथक किया। बांस, केला, शोरीया रॉबुस्टा और टैक्टोना ग्रैन्डिस से पृथक्कृत संवर्ध नाइट्रोजन- निर्धारण के संदर्भ में उत्कृष्ट हैं। पृथक्कृत संवर्ध द्वारा निर्धारित वातावरणीय नाइट्रोजन की अधिकतम मात्रा 25.98 mg N/100ml है, मीडियम प्रयोगशाला अवस्था के तहत 3 दिन के भीतर उपभुक्त हुआ।

चावल भूसी, कम्पोस्ट, बांस खरपतवार और वर्मिकम्पोस्ट के साथ उपचारित मृदाओं में राइजोबियम एवं एजोटोबेक्टर संरोपण क्रमशः ए. ऑरिकूलिफॉर्मिस और यूकेलिप्टस प्रजाति की वृद्धि बढ़ाने में और राइजोबियम द्वारा ग्रन्थि विन्यास में ज्यादा प्रभावी पाए गए। एजोटोबेक्टर अथवा राइजोबियम के साथ ए एम फंगी के दोहरे संरोपण एकल उपयोग की अपेक्षा बेहतर पाए गए। जैव उर्वरकों के उपयोग के समय का इष्टतमीकरण; बीज संरोपण के साथ अथवा इसके बिना अंकुरण के दो सप्ताह बाद राइजोबियम के मूल परिवेधी उपयोग ने परपोषी प्रजातियों (ऐकेशिया ऑरिकूलिफॉर्मिस और ए. मैन्जियम) की बेहतर ग्रन्थि विन्यास एवं वृद्धि को प्रदर्शित किया। राइजोबियम के पांच पृथक्कृत संवर्धों ने बेहतर परिणाम दिखाए जबकि पौधे उपचार (1 किग्रा. पॉट में उगे मूल परिवेधी मृदा में इन्जेक्ट किए 1 मिली प्रति पौधे) के साथ राइजोबियम संवर्धों के साथ पूर्वोपचार (10 मिलि. प्रति 100 बीज की दर से 100 से 1000 M सैल/मि.ली धारित 24 ह्यू ब्राथ) ने परपोषी वृक्ष वृद्धि अथवा ग्रन्थि विन्यास की अतिरिक्त वृद्धि को नहीं दर्शाया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

वर्ष 2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : डेन्ड्रोकैलामस एस्पर की उतक संवर्धन से उगाई पादपिकाओं का बहुस्थानिक क्षेत्र परीक्षण (आई एफ पी-4/बी जी टी-एस पी-4/पी-1/2002-2006)

स्थिति : सभी आर ए जी सदस्यों के सुझाव के अनुसार रोपण 3.5 वर्ष के हैं, खाद्य के रूप में बांस के पोषणिक मान पर प्रयोगों का मूल्यांकन किया जा रहा है।

परियोजना 2 : सन्तति परीक्षण और संकरण द्वारा यूकेलिप्टस का आनुवंशिक सुधार (आई एफ पी-7/बी जी टी-एस पी-7/पी-1/2002-2006)

स्थिति : रोपित सभी पादपों के अर्ध वार्षिक वृद्धि आँकड़े (कुल ऊँचाई, स्पष्ट प्रस्तंभ ऊँचाई और कॉलर व्यास) अभिलिखित किए और प्रदर्शन को मूल्यांकित किया जा रहा है। प्रजनन मान के साथ उपर्युक्त लक्षणों के लिए सामान्य संयोजन क्षमता स्थापित की गई। मर्त्यता दर को नियंत्रित किया और मृत की जगह दूसरे लगाए गए। फरवरी 2005 के अंत में वर्तमान मर्त्यता दर 4.17 प्रतिशत थी।

परियोजना 3 : बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के संदर्भ में बांस प्रजातियों की परिवर्तनशीलता, इनके प्रदर्शन, संरक्षण और अर्थव्यवस्था, पर अध्ययन (आई एफ पी-10/बी एस/पी-4/2002-2007)

स्थिति : बांस प्रवर्धन तकनीकों के विकास पर पौधशाला परीक्षण : पहले परीक्षण में, हार्मोनों के साथ अथवा हार्मोनों के बिना दोहरी गाँठ, एकल गाँठ और द्विशाखित एकल गाँठ के साथ कलमों (1-2 साल के बम्बूसा टूल्डा नालों से एकत्रित) का उपयोग किया और (i) कयारी मृदा तरत (ii) 1 सेमी ऊपर और (iii) कयारी मृदा परत के 1 सेमी नीचे पर नाल कली स्तरों को पोषित करके सतह वन मृदा (उपचार बिना) धारित मातृ कयारी में रोपित किया। कलमों को भूसे के पलवार के साथ ढककर उचित सिंचाई, निराई और कीटनाशीय उपयोग के साथ पोषित किया। 30 दिन बाद सभी उपचारित कलम में अंकुरण अभिलिखित किया। जड़ विकास भी अभिलिखित किया। एकल गाँठ कलमों की तुलना में दोहरी गाँठ कलमों में अधिकतम मूलोत्पत्ति हुई। एक कली वाली द्विशाखित गाँठों ने 100 प्रतिशत अंकुरण दिखाया किन्तु 30 दिन बाद 20 से 30 प्रतिशत मूलोत्पत्ति दिखाई। आगे प्रेक्षणों के लिए कयारियों को पोषित किया गया।



दोहरी गाँठ कलम, से बांस पौधे

उत्कृष्ट बांस रोपण पदार्थों का पर-स्थाने संरक्षण : उत्कृष्ट बांस रोपण पदार्थ (प्रकन्द, नाल कलमों आदि) एकत्र किए और पर-स्थाने संरक्षण के लिए मन्दार में रोपित किया। पादपों को मानक वन संवर्धनिक विधियों के अनुसार पोषित किया जा रहा है। रोपित बांसों के वृद्धि पैरामीटरों को समय-समय पर अभिलिखित किया जा रहा है।

बाजार सर्वेक्षण, बांस उपयोगों पर सर्वेक्षण और सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण : उत्तर और दक्षिण बंगाल तथा झारखण्ड से वनों और गाँवों में उगाए रोपणों पर अर्थव्यवस्था के संबंध में आँकड़े, फसल कटान आँकड़े भी एकत्र किए। विभिन्न स्थानों में बांसों की



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

उपयोगिता अभिलिखित की गई। विभिन्न राज्यों में बांस वनों और बांस रोपणों के कारण सामाजिक आर्थिक विश्लेषण के लिए आँकड़े भी एकत्र किए।

परियोजना 4 : झारखण्ड और दक्षिण पश्चिम बंगाल की कुछ अधिदेश प्रजातियों के उन्नत रोपण स्टॉक उत्पादन के लिए उपयुक्त पात्र मीडिया और जड़ ट्रेनर आकार का मानकीकरण (आई एफ पी-1/बी एस-एस पी-1/पी-1/2002-2006)

स्थिति : उपचार की विभिन्नता यथा – विभिन्न पात्र मीडिया मिश्रण और उर्वरक, के साथ पौधों की वृद्धि में काफी विभिन्नता थी। पात्र मीडिया मिश्रण में फार्म यार्ड खाद और कम्पोस्ट के उपयोग ने पौधों की वृद्धि को बढ़ाया। 150 सी सी, 250 सी सी और 350 सीसी से हाइकोपोट आकार की वृद्धि के साथ सभी उपचारों में ऐकेशिया मैन्जियम और डैल्बर्जिया सिस्सू के लिए पौधों की ऊँचाई, कॉलर व्यास और जैवमात्रा में वृद्धि हुई। 250 सीसी हाइकोपोट में मेलाइना आर्बोरीया और यूकेलप्टिस कमल्डूलिनसिस के लिए पौधों की अधिकतम ऊँचाई पाई गई किन्तु पौधों का कॉलर व्यास 350 सीसी हाइकोपोट की अपेक्षा कम पाया गया। फलस्वरूप, कुल पौध जैवमात्रा 350 सी सी हाइकोपोट में उच्च पाई गई, यद्यपि ऊँचाई 250 सी सी हाइकोपोट की अपेक्षा निम्न पाई गई। 17 पात्र मीडिया के पात्र के पोषक मात्रा और भौतिक अभिलक्षण पात्र पदार्थ के विभिन्न मिश्रणों में काफी अलग-अलग थे।

परियोजना 5 : सतत रोपण वानिकी में गैर-परम्परागत परपोषी फ्लेमिन्जिया प्रजातियां और इसकी संभावना पर लाख खेती की जांच (आई एफ पी-13/एन डब्ल्यू एफ पी-एस पी 1/पी -7/2002-2005)

स्थिति : फ्लेमिन्जिया मैक्रोफाइला साथ ही साथ फ्लेमिन्जिया सेमिएलाटा भूखण्डों में नियंत्रण साथ ही प्रायोगिक अवस्था में फसल अघानी-05 जनन लाक्षा प्रगति पर है।

परियोजना 6 : विशेष वनीकरण आवश्यकताओं के लिए कम्पोस्ट बनाने पर परीक्षण और लागत-प्रभावी पैकेजों का विकास (आई एफ पी-2/बी एस-सी पी-2/पी-1/2002-2007)

स्थिति : पानी के साथ पदार्थ का पुनरमिश्रण करके 120 दिन के भीतर चकोर से कम्पोस्ट तैयार किया। कच्चे पदार्थ के साथ मृदा को मिलाने और पानी के साथ पदार्थ के पुनरमिश्रण के साथ कम्पोस्ट तैयार करने के लिए लिया गया समय 70 दिन तक घटा। कच्चे पदार्थ के साथ मृदा एवं 1 प्रतिशत यूरिया (डब्ल्यू/डब्ल्यू आधार पर) को मिलाने से कम्पोस्ट उत्पादन के लिए लिया गया समय दुबारा 60 दिन तक घटा। कम्पोस्ट की उत्पादन लागत रुपये 5.00 प्रति कि.ग्रा.पाई गई।

परियोजना 7 : छोटा नागपुर और सन्थाल परगना की चयनित औषधीय वनस्पति के लिए उपयुक्त कृषि वन संवर्धनिक प्रणालियों का विकास (आई एफ पी-20/ई आर एम(एम पी)/(2003-2008)

स्थिति : विथानिया सोमिफेरा पादपों को बीज से सफलतापूर्वक उगाया गया, जिन्हें प्रवर्धित करना बहुत कठिन है।

परियोजना 8 : दार्जिलिंग हिमालयों की संकटस्थ औषधीय पादपों के जननदृव्य स्रोत बैंक का सृजन (आई एफ पी-11/ई आर एम (एस पी) पी-5/2003-2008)

स्थिति : दार्जिलिंग जिले (पूर्वी हिमालय) के तहत सूकना एवं सोनादा में पहाड़ की तराई में खास प्रजातियों के पर-स्थाने संरक्षण किया गया। वृद्धि दर और पुष्पण, फलन एवं उत्पादन पर आँकड़े अभिलिखित किए।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

2005-2006 के दौरान जारी परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : स्कलीकीरा ओलीओसा (लॉर) ओकेन, एक लाख परपोषी : पात्रे प्रवर्धन (डी बी टी द्वारा विधीयित)
(आई एफ पी / 2003-2006)

स्थिति : पात्रे कुसुम संवर्ध के पत्ती पातन को रोका गया। स्वस्थ दीर्घकृत प्ररोह देखे गए।

परियोजना 2 : रांची में कम्पनी की 5 हैक्टेयर भूमि पर सेन्द्रल कोलफील्ड लिमिटेड द्वारा जैव-सौन्दर्यपरक आवास का विकास (सी सी एल, रांची द्वारा निधीयत) (आई एफ पी / 2003-2008)

स्थिति : क्षेत्र कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 3 : जीम्नीमा सील्वीस्टरी और एम्बीलिया रिबस-उच्च विपणन क्षमता के औषधीय पादप, के लिए कृषि-तकनीकों का विकास (आई एफ पी-22 / ई आर एम (एम पी) पी-8 / 2004-2007)

स्थिति : प्राकृतिक वनों और वन विभाग पौधशालाओं दोनों से जीम्नीमा सील्वीस्टरी कलमें एकत्र की गई।

परियोजना 4 : दार्जिलिंग हिमालयों में संरक्षण एवं सतत प्रबंध पर देशी जानकारी का प्रलेख-पोषण (आई एफ पी-25 / ई ई / 2004-2007)

स्थिति : स्टेशन में वैज्ञानिक की अनुपलब्धता के कारण वित्तीय वर्ष 2005-2006 के दौरान कोई प्रगति हासिल नहीं की जा सकी।

वर्ष 2005-2006 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : किसानों में रोपण पदार्थों के वितरण और प्रदर्शन के लिए पूर्वी हिमालयों में विभिन्न कृषि जलवायवीय क्षेत्रों में औषधीय पादप उद्यानों का सृजन (जी ओ / जे आर-1 / 2005-2007)

स्थिति : प्रवर्धन केन्द्र में ख़ास प्रजातियों की कायिक कलमें लगाई गई और मुफ्त वितरण तथा रोपण हेतु दो लाख पौधे तैयार हैं। दिलाराम, दार्जिलिंग हिमालयों की पहाड़ियों में शाकीय उद्यान और प्रवर्धन केन्द्र विकसित किया गया।

सारांश: परियोजनाओं की संख्या

	2005-2006 में पूरी की गई परियोजनाओं संख्या	2005-2006 की जारी परियोजनाओं की संख्या	2005-2006 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	2	8	-
बाहय परियोजनाएं	-	4	1
कुल	2	12	1



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित और हस्तान्तरित

1. परियोजना "पुरुलिया, पश्चिम बंगाल में पायलट जननलाक्षा फार्म और लाख परिष्करण सुविधाओं का विकास" के तहत राज्य वन विभाग, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल साथ ही साथ एस ई पी सी, कोलकाता द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षणार्थियों में लाख खेती की उन्नत तकनीकों का हस्तान्तरण किया।
2. राज्य वन विभाग, झारखण्ड के कार्मिकों में वैज्ञानिक विधियों द्वारा बांस का प्रवर्धन हस्तान्तरित किया।
3. भूम्यूपरिक चैम्बर में कम्पोस्ट उत्पादन हेतु ऐरोबिक प्रक्रिया का विकास किया।
4. विभिन्न औषधीय पादपों के गुणवत्ता रोपण पदार्थ उत्तर-पश्चिम बंगाल के ग्रामीणों में मुफ्त वितरण के लिए तैयार किए।
5. उन्नत वर्मिकम्पोस्ट के उत्पादन के लिए वर्मिकम्पोस्ट इकाई की स्थापना की गई।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण

शिक्षा

1. संस्थान द्वारा 15 मई 2005 को रांची, केन्द्र में व.अ.सं., सम-विश्वविद्यालय, देहरादून के तहत वानिकी में एमएस सी और डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित की गई। जिसमें 25 अभ्यर्थियों में से 22 अभ्यर्थियों ने भाग लिया।
2. इस संस्थान के डॉ. अनिमेष सिन्हा, वैज्ञानिक 'सी' ने लाख परपोषी पादपों के वन आनुवंशिकी संसाधनों के पात्र संरक्षण और आणविक पहलू पर अनुसंधान करने की संभावनाओं का पता लगाने और विचार-विमर्श के लिए 19 और 20 अक्टूबर 2005 तक केन्द्रीय औषधीय एवं सुरभित पादप संस्थान, लखनऊ का भ्रमण किया।
3. श्री संदीप कुजूर, भा.व.से., उप वन संरक्षक ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में 25 जुलाई से 12 अगस्त 2005 तक सम्पन्न 10 वर्ष की सेवा वाले अधिकारियों के लिए "पदोन्नति सम्बद्ध उन्नत वन प्रबंध पाठ्यक्रम" में भाग लिया।
4. श्री दिनेश प्रसाद ने 20 फरवरी से 10 मार्च 2006 तक भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (एग्रिमेंट प्रभाग), शिवाजीनगर, पुणे में "एग्रिमेंट ऑब्जर्वर्स पाठ्यक्रम" पर तीन सप्ताह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया।

प्रशिक्षण

आयोजित

1. राज्य वन विभाग कार्मिक, ग्रामीणों, फॉरेस्टरों, फॉरेस्ट गार्डों, कठघोरा वन प्रभाग के फॉरेस्टरों और छत्तीसगढ़ राज्य के वन समिति सदस्यों और एस ई पी सी, कोलकाता के प्रशिक्षणार्थियों के लिए 29 मार्च 2005 से 2 अप्रैल 2005; 4 से 8 अप्रैल 2005; 13 से 17 अप्रैल 2005; 25 से 29 अप्रैल 2005; 2 से 6 मई 2005 और 19 से 23 सितम्बर 2005 तक लाख खेती की उन्नत तकनीकों पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
2. राज्य वन विभाग, झारखण्ड के उप वन संरक्षकों, रेंज आफिसरों, फॉरेस्टरों, फॉरेस्ट गार्डों के लिए 21 से 23 जून 2005; 24 और 25 जून 2005 और 28 से 30 जून 2005 तक वैज्ञानिक विधि द्वारा बांस के प्रवर्धन पर प्रशिक्षण आयोजित किया।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

3. राज्य वन विभाग, झारखण्ड के फॉरेस्ट गार्ड/फॉरेस्टर के लिए 23 से 25 नवम्बर 2005 तक केन्द्रीय टसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची के सहयोग से "टसर खेती" पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया।
4. राज्य वन विभाग, झारखण्ड के फॉरेस्ट गार्ड/फॉरेस्टर के लिए 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2005 तक लाख खेती की आधुनिक तकनीक पर प्रशिक्षण।
5. राज्य वन विभाग, झारखण्ड के उप वन संरक्षकों, रेंज ऑफिसरों, फॉरेस्टर, फॉरेस्ट गार्ड के लिए 5 से 10 दिसम्बर 2005; और 12 और 13 दिसम्बर, 2005 तक बांस प्रवर्धन पर प्रशिक्षण।

सहानुबंध एवं सहयोग

अन्तर्राष्ट्रीय

ई डब्ल्यू आई, यू एस ए; डी एफ आई डी (यू के) और आई डी आर सी

राष्ट्रीय

नाबार्ड; औषधीय पादप बोर्ड; जैव प्रौद्योगिकी विभाग; केन्द्रीय कोयला क्षेत्र लिमिटेड; दामोदर घाटी निगम; आई एल आर आई, नामकुम; आई एस एम, धनबाद; एच ए आर पी; प्लान्डू; बी ए यू, कनकी, रांची; रा.व.वि, झारखण्ड; रा.व.वि. पश्चिम बंगाल; रा.व.वि., बिहार; एफ एस आई; पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता और टाटा स्टील, हजारीबाग।

प्रकाशन

1. ऐनुअल लैक बुलेटिन ऑफ दी इन्स्टिट्यूट
2. इम्प्रूव्ड मैथड ऑफ लैक कल्टिवेशन पर पुस्तिका
3. "बांस उत्पादन की उन्नत तकनीक एवं प्रवर्धन विधि" पर पुस्तिका
4. संस्थान द्वारा 20 जनवरी 2004 को आयोजित "मानवोद्भवी दबाव एवं निम्नीकरण के तहत भूमियों के सुधार" पर राष्ट्रीय सेमिनार की कार्यवाही प्रकाशित की गई।

परामर्श

संस्थान राज्य वन विभागों सहित अनेकों संगठनों को परामर्शी एवं अन्य सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। इसमें शामिल हैं;

1. झारखण्ड का बांस संसाधन सर्वेक्षण, झारखण्ड राज्य वन विकास निगम द्वारा निधीयित।
2. भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् और भारतीय वन सर्वेक्षण, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता के बीच हस्ताक्षरित समझौता-पत्र के तहत पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न जिलों के वन मृदा नमूनों और वन धरातल खरपतवारों की आर्गेनिक कार्बन मात्राओं का आकलन और वन धरातल खरपतवारों का 65 डि.से. पर शुष्क भार प्रतिशत का मूल्यांकन।
3. मैथॉन राइट बैंक थर्मल पावर प्रोजेक्ट, डी वी सी और चन्द्रापुर थर्मल पावर स्टेशन, डी वी सी, चन्द्रापुर में हरित पट्टी का विकास।



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

4. रांची में 5 हैक्टेयर से अधिक कम्पनी की भूमि पर केन्द्रीय कोयला क्षेत्र लिमिटेड द्वारा जैव-सौन्दर्यपरक आवास का विकास।
5. पुरुलिया जिला, पश्चिम बंगाल में पायलट जननलाक्षा फार्म और लाख परिष्करण सुविधाओं के विकास के लिए और लाख की वैज्ञानिक खेती के क्षेत्र में वन उत्पादकता संस्थान के साथ एस ई पी सी, कोलकाता का सहयोग।
6. टाटा पावर कम्पनी लिमिटेड द्वारा 120 मे.वा. थर्मल पावर इकाई की स्थापना।
7. टाटा स्टील, थटोटान्ड, हजारीबाग से प्राप्त मृदा नमूनों का "भौतिक रासायनिक विश्लेषण" और "भौतिक विश्लेषण" का आकलन।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालाएं / सेमिनार / संगोष्ठी / प्रदर्शनियां

आयोजित

1. श्री आर., कृष्णामूर्ति, संस्थान निदेशक ने 23 नवम्बर 2005 को पर्यावरण भवन, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली में सोसाइटी की बैठक में भाग लिया।
2. पावर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण के लिए 17 नवम्बर 2005 को पूर्व - आर ए जी बैठक सम्पन्न हुई।
3. संस्थान की सातवीं अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक 15 दिसम्बर 2005 को सम्पन्न हुई।
4. चन्द्रापुर थर्मल पावर स्टेशन, चन्द्रापुर में राख ढेर और निम्नीकृत क्षेत्रों को हरा करने" पर श्री जे. विश्वास, उप निदेशक, डी वी सी (मृदा संरक्षण), हजारीबाग के साथ 25 जनवरी 2006 को एक बैठक भी आयोजित की गई।
5. मगध और आम्रपाली ओ सी पी की संरक्षण योजना तैयार करने के लिए विचार-विमर्श तथा टी ओ आर को अन्तिम रूप देने हेतु मार्च 2006 को सी सी एल, रांची के वरिष्ठ अधिकारियों ने संस्थान का दौरा किया।

सहभागिता

1. श्री आर. कृष्णामूर्ति, वन संरक्षक, संस्थान निदेशक ने केन्द्रीय टसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का, नगरी, रांची द्वारा आयोजित 26 मई 2005 को अनुसंधान सलाहकार समिति के एक सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।
2. श्री एच.सी. सिन्धुवीरेन्द्र, अनुसंधान अधिकारी ने यूरोपियन यूनियन-स्माल प्रोजेक्ट फैंसिलिटी द्वारा सह-प्रायोजित जोएनीथम रीसर्च, इन्सटिट्यूट ऑफ एनर्जी रिसर्च, आस्ट्रिया और फ्रीबर्ग यूनिवर्सिटी, जर्मन के सहयोग से देहरादून में भा. वा.अ.शि.प. द्वारा 15 से 17 जून 2005 तक आयोजित "भारत में वानिकी उपशमन परियोजना को सुसाध्य बनाना : पर्णधारी संवाद और क्षमता निर्माण को प्रोत्साहित करना" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
3. श्री आर. कृष्णामूर्ति, भा.व.से. (डब्ल्यू बी : 1984), निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने 20 जून से 01 जुलाई 2005 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में उन्नत वन प्रबंध पाठ्यक्रम में भाग लिया।
4. श्री आर. कृष्णामूर्ति, निदेशक और श्री प्रेमजीत आनन्द, उप वन संरक्षक ने "चन्द्रापुर थर्मल पावर प्रोजेक्ट में हरित पट्टी विकास/रोपण : परामर्श एवं संबंध सेवाएं" परियोजना के तहत शुरू किए जाने वाले रोपण कार्य के संबंध में चन्द्रापुर में चन्द्रापुर थर्मल पावर स्टेशन, डी वी सी के अधिकारियों के साथ 10 जून 2005 को सम्पन्न संयुक्त बैठक में भाग लिया।



5. निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची को शीलैक एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउन्सिल की प्रशासन की समिति के सदस्य के रूप में नामित किया गया। उन्होंने 20 अगस्त, 2005 को कोलकाता में प्रशासन की समिति की 296 वीं बैठक में भाग लिया।
6. श्री आर. कृष्णमूर्ति, निदेशक ने 30 अगस्त 2005 को सचिव, वन एवं पर्यावरण, झारखण्ड सरकार, रांची के कार्यालय में सम्पन्न पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन विशेषज्ञ समिति की बैठक में भाग लिया। यह बैठक टाटा पावर कम्पनी लिमिटेड द्वारा 120 मेगावॉट थर्मल पावर इकाई की स्थापना के संबंध में थी।
7. आयुक्त एवं सचिव, वन, झारखण्ड सरकार के कक्ष में 9 सितम्बर 2005 को "झारखण्ड में लाख के विकास" पर बैठक में भाग लिया।
8. श्री प्रेमजी, आनन्द, उप वन संरक्षक ने संस्थान के नोडल अधिकारी (सांख्यिकी) के रूप में वन विज्ञान भवन, सेक्टर-V, आर.के. पुरम, नई दिल्ली में 20 और 21 दिसम्बर, 2005 को "वानिकी सांख्यिकी पर राष्ट्रीय परामर्श" पर बैठक में भाग लिया। क्रमशः सत्र-I, सत्र-II, सत्र-III और सत्र-IV में बैठक की अध्यक्षता डॉ. शशि कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., डॉ. बिपिन बिहारी, उप वन महानिरीक्षक वन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, डॉ. देवेन्द्र पाण्डेय, निदेशक, भारतीय वन सर्वेक्षण और डॉ. के.डी. सिंह पूर्व एफ ए ओ विशेषज्ञ ने की।
9. लाख विकास पर पाइलट परियोजना के संबंध में वन संरक्षक (कार्य योजना और अनुसंधान सर्किल), रा.व.वि., झारखण्ड के साथ 9 दिसम्बर 2005 को एक बैठक सम्पन्न हुई।
10. श्री आर. कृष्णमूर्ति, निदेशक ने एक विशिष्ट सदस्य के रूप में 23 और 24 जनवरी 2006 को केन्द्रीय टसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नागरी, रांची की अनुसंधान सलाहकार समिति की 25वीं बैठक में भाग लिया।
11. डॉ. अनिमेष सिन्हा, वैज्ञानिक सी ने उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में 9 और 10 फरवरी 2006 को आयोजित "वृक्ष जैव प्रौद्योगिकी : भारतीय परिदृश्य" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया और "कुसुम (स्कलीकीरा ओलीसोसा) के परिपक्व वृक्षों के ग्रन्थिल, कर्तकतकों से पात्रे प्ररोह प्रचुरोद्भवन "शीर्षक के तहत एक सारांश शोधपत्र प्रस्तुत किया। इस भ्रमण के दौरान डॉ. सिन्हा से जैव प्रौद्योगिकी विभाग सहायता प्राप्त परियोजना की प्रगति के विकास हेतु लाख परपोषी पादपों के वन आनुवंशिक स्रोतों के पात्रे संरक्षण और आण्विक पहलू पर अनुसंधान शुरू करने के लिए एन सी एल, पुणे, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता, आई आई सी बी, कोलकाता और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के साथ परामर्श करने के लिए कहा गया।
12. डॉ. मालाबिका रे, वैज्ञानिक डी ने राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में 6 से 8 फरवरी 2006 तक "औषधीय और सुरभित पादपों को उगाने, प्रक्रमण, उपयोगिता परिवर्धन और विपणन" पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया और "झारखण्ड की औषधीय पादपों की कुछ संकटापन्न प्रजातियों के वृद्धि प्रदर्शन में विभिन्नता" शीर्षक से शोधपत्र प्रस्तुत किया।
13. डॉ. एस. नाथ, वैज्ञानिक ई, और डॉ. पी.के. दास, अनु.अधिकारी ने बी आई टी, मिसरा, रांची द्वारा 6 मार्च 2006 को आयोजित "प्रौद्योगिकी विकास, उपयोग और हस्तान्तरण" पर कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में भाग लिया।
14. डॉ. मालाबिका रे, वैज्ञानिक डी ने मिदनापुर कॉलेज, मिदनापुर पश्चिम बंगाल में 22 और 23 मार्च 2006 को सम्पन्न "औषधीय पादप-इसकी वर्तमान स्थिति, सम्भावना एवं संरक्षण" पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया।
15. श्री आर. कृष्णमूर्ति, निदेशक और श्री प्रेमजीत आनन्द, उप वन संरक्षक ने "बिहार राज्य में समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबन्धन एवं संरक्षण योजना" को अन्तिम रूप देने के लिए श्री जी.के. प्रसाद, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. और श्री मुदित



वार्षिक प्रतिवेदन
2005-2006

कुमार सिंह, सहा. महानिदेशक (पी एफ/जे एफ एम) भा.वार.अ.शि.प., प्रधान मुख्य वन संरक्षक, बिहार सरकार, मुख्य सचिव, बिहार सरकार और सचिव पर्यावरण एवं वन, बिहार सरकार के साथ बैठक में भाग लेने के लिए 8 मार्च 2006 को पटना का दौरा किया।

16. डॉ. अनिमेष सिन्हा, वैज्ञानिक सी ने निदेशक, वन उत्पादकता संस्थान रांची के प्रतिनिधि के रूप में देहरादून में 22 और 23 मार्च, 2006 को सातवीं अनुसंधान नीति समिति की बैठक में भाग लिया।

प्रतिष्ठित आगन्तुग

1. वन एवं वन्यप्राणि से संबंधित प्रबंध एवं कार्यकलापों के अध्ययन के लिए पूर्वी भारत दौरा कार्यक्रम पर 24 से 26 मई 2005 तक पूर्वी वन राजिक महाविद्यालय, भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, कुर्सियांग, जिला दार्जिलिंग, (पश्चिम बंगाल) के 2003-2005 रेंजर्स कोर्स के तीस फॉरेस्ट रेंजर प्रशिक्षणार्थियों ने वन उत्पादकता संस्थान, रांची का भ्रमण किया।
2. श्री जी.के. प्रसाद, भा.व.से, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. और श्री प्रोदिप्तो घोष, भा.प्र.से., सचिव, भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली ने 6 जुलाई, 2005 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची और इसके अनुसंधान केन्द्र 'एफ आर सी मन्दार' का भ्रमण किया।
3. डॉ.एस. कुमार, प्रमुख और डॉ. पी.डे, प्रधान वैज्ञानिक, एच.ए.आर.पी, प्लान्डू, रांची ने वन उत्पादकता संस्थान के साथ सहयोग के लिए 18 जुलाई 2005 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची का भ्रमण किया।
4. डॉ. बंगाली बाबू, निदेशक, डॉ. ए. भट्टाचार्य, प्रमुख, टी ओ टी, डॉ. आर. रमानी, वैज्ञानिक और डॉ. निरंजन प्रसाद, वैज्ञानिक आई एल आर आई, नामकुम, रांची ने वन उत्पादकता संस्थान के साथ सहयोग के लिए 19 जुलाई 2005 को वन उत्पादकता संस्थान और मन्दार अनुसंधान केन्द्र, रांची का भ्रमण किया।
5. शीलैक निर्यात प्रोत्साहन परिषद्, कोलकाता (वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार) के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और कार्यकारी निदेशक ने पुरुलिया जिला, पश्चिम बंगाल में पाइलट जननलाक्षा फार्म एवं लाख परिष्करण सुविधाओं के विकास के लिए और लाख की वैज्ञानिक खेती के क्षेत्र में वन उत्पादकता संस्थान के साथ सहयोग के लिए 11 अगस्त 2005 को वन उत्पादकता संस्थान (मुख्यालय), रांची का भ्रमण किया।
6. निदेशक, विज्ञान एवं प्रबंध संस्थान, रांची ने वन उत्पादकता संस्थान, रांची के साथ संभावित सहयोग पर विचार-विमर्श करने के लिए अगस्त, 2005 को संस्थान का भ्रमण किया।
7. सी एम पी डी आर एल एवं सी सी एल, रांची के वरिष्ठ अधिकारियों और डी वी सी, हजारीबाग के प्रशिक्षणार्थियों ने माह के दौरान वन अनुसंधान केन्द्र, मन्दार, रांची में प्रयोगशाला तथा अन्य सुविधाओं को देखा।
8. श्री जे.सी. काला, महानिदेशक, वन पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, श्री आर.पी.एस. कटवाल, अतिरिक्त महानिदेशक, वन्यप्राणि, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार और श्री जे. किशवान, वन महानिरीक्षक (एफ सी), पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने 9 जनवरी 2006 को संस्थान का भ्रमण किया।
9. श्री प्रकाश ओरोव, राज्य परियोजना निदेशक, झारखंड जनजाति विकास सोसाइटी के साथ "झारखंड जनजाति विकास सोसाइटी के चयनित कार्यक्रम गाँवों में वन उपज विपणन प्रणाली" पर अध्ययन शुरू करने के संबंध में एक बैठक आयोजित की गई।